नारी प्रश्न

सरला माहेश्वरी

नारी प्रश्न

सरला माहेश्वरी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2025

© *सरला माहेश्वरी*

नवजागरण के मनीषियों की स्मृति में

जिन्होंने हज़ारों वर्षों के अंधेरे को चीर कर माना

और मनवाया कि नारी भी एक मनुष्य है

अनुक्रम

भूमिका	4
नारीवाद का पश्चिमी संदर्भ	7
विवाह, तलाक और मार्क्स	100
नवम्बर क्रांति और नारी प्रश्न	111
भारतीय समाज का विकास और नारी	119
प्रागैतिहासिक युग	127
औरतों की कम होती हुई आबादी	138
मौजूदा सामाजिक-आर्थिक ढाँचे को बदलो	148
राष्ट्रीय महिला आयोग	166
महिला आरक्षण	178
नौकरशाही का ग्रहण	200
मां का दूध बनाम पाउडर-दूध	213
टकेपंथियों की नयी जमात	218
सती महिमा मंडन	228
परिशिष्ट - I	236
परिशिष्ट - II	256
परिशिष्ट - III	299

भूमिका

आधुनिक दुनिया का कोई भी सभ्य देश आज नारी के अधिकारों के प्रश्न की उपेक्षा नहीं कर सकता। अगर और स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह कहना होगा कि सामाजिक जीवन में नारी-पुरुष के समान अधिकारों के औचित्य को स्वीकार न करने वाला कभी भी खुद को प्रगतिशील नहीं कह सकता। कई शताब्दियों से गुजरते हुए मानव सभ्यता आज विकास के एक ऊँचे स्तर पर पहुँची है, अनेक संघर्षों के अनुभवों को लेकर मानव समाज आगे बढ़ा है, ज्ञान-विज्ञान का विकास हुआ है। पुरातनपंथी धर्मान्धता के कुसंस्कार कदम-कदम पर बुद्धिवाद और वैज्ञानिक विश्लेषण के सामने धराशायी हो रहे हैं, लोगों के बीच वर्ग-विभेद और नारी-पुरुष के बीच भेदभाव विधि का कोई शाश्वत विधान नहीं है। यह भेदभाव प्रभु वर्गों द्वारा तैयार किया गया है। यह आज ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित हो चुका है। इसीलिये समाज में वर्ग-विभाजन के विरुद्ध और नारी-पुरुष के भेदभाव के विरुद्ध एकसाथ संघर्ष चल रहे हैं। इस संघर्ष में नारी-पुरुष सहित समाज के सभी शोषित-पीड़ित लोग शामिल हैं। किन्तु किसी भी संघर्ष की सफलता के लिये उसकी पृष्ठभूमि, यथार्थ स्थिति, लक्ष्य और उद्देश्य के विषय में स्पष्ट धारणा का होना बहुत जरूरी है। लेखिका सरला माहेश्वरी की पुस्तक इस विषय में काफी सहायक होगी। लेखिका ने अपनी पुस्तक ''नारी प्रश्न'' में बड़े परिश्रम और

निष्ठा के साथ समाज में महिलाओं की स्थिति के विषय में बहुत से तथ्यों का संग्रह करते हुए उनका वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका विश्लेषण ऐतिहासिक है तथा दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय है। नारी की गुलामी या पराधीनता के प्रश्न को वे किसी सीमित दायरे में नहीं देखती बल्कि सामाजिक विकास की समग्र धारा के साथ उसे जोड़कर देखती है। उन्होंने प्रतिक्रियावादी और प्रगतिशील शक्तियों के बीच के द्वन्द्व को उजागर किया है। आधुनिक सभ्यता के केन्द्र, यूरोप के देशों में नवजागरण के प्रारम्भ से ही नारी अधिकारों का प्रश्न उठ खड़ा हुआ था, यह उन्होंने बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाओं के जरिये प्रमाणित किया है। इसी के साथ उन्होंने हमारे देश में महिलाओं की स्थिति तथा नारी मुक्ति संग्राम का भी संक्षिप्त जायजा लिया है। इसके अलावा मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में विभिन्न प्रतिक्रियावादी और धार्मिक तत्ववादी शक्तियों के हमलों को देखते हुए नारी आंदोलन के समक्ष जो नयी चुनौतियां खड़ी हुई हैं उन्हें भी श्रीमती माहेश्वरी ने बड़े सही ढंग से रखा है।

हिंदी में नारी आंदोलन के विषय में इस तरह की गंभीर शोधपरक पुस्तकों का काफी अभाव है। सरला माहेश्वरी की यह पुस्तक कुछ हद तक इस अभाव को पूरा करेगी।

लेखिका सरला माहेश्वरी अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की एक नेत्री हैं, भूतपूर्व सांसद हैं तथा जनवादी लेखक संघ की अन्यतम संगठनकर्त्ता हैं। उनकी